

मैं आखिरी दहाड़ के लिए तैयार: पेस

कहते हैं कि शेर कभी बूढ़ा नहीं होता। लिण्डर पेस की उम्र यूँ तो 46 के पार जा चुकी है लेकिन उनके अंदर अभी भी खेल का जो जज्बा है, उसके सामने 22 साल के एथलीट भी पानी भरते हैं। अपने करियर के अंतिम साल में प्रवेश कर चुके पेस पांच अलग-अलग दशक

में खेलने के बेहद करीब हैं। एक खेल भरे माहौल में पैदा हुए पेस की फिटनेस उनके करियर में अहम हिस्सा रही लेकिन इसमें कई लोगों की मेहनत रही। 18 बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन और देश के इकलौते व्यक्तिगत ओलंपिक पदक विजेता टेनिस खिलाड़ी पेस इस साल संन्यास

ले लेंगे। ऑस्ट्रेलियन ओपन में आखिरी बार खेलने के लिए मेलबर्न जाने से पहले लिण्डर पेस से अभिषेक त्रिपाठी ने उनके करियर और भविष्य की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। पेश है उस बातचीत के प्रमुख अंश-

साक्षात्कार

● आप इस साल संन्यास लेंगे। आप आखिरी बार ऑस्ट्रेलियन ओपन खेलने जा रहे हैं। आपके दिल में क्या चल रहा है?

-ऑस्ट्रेलिया एक ऐसी जगह रही है जहाँ मैंने अपना पहला ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट खेला था। 1989 में मैंने अपना पहला ग्रैंडस्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन में खेला था। तब से लेकर आज तक मैं पांच अलग-अलग दशकों में ऑस्ट्रेलियन ओपन में खेलने के बेहद करीब हूँ। यह पल मेरे लिए बेहद खास है। ऐसे में ऑस्ट्रेलियन ओपन हमेशा से मेरे लिए खास रहा है और मैं इस बार जब मैं वहाँ खेलने उतरूंगा तो उस खास अहसास का अनुभव करूंगा।

● आपने डबल्स और मिक्स्ड डबल्स में कुल 18 ग्रैंडस्लैम जीते हैं। आप डेविस कप में डबल्स के सबसे सफल खिलाड़ी हैं। आपके नाम ओलंपिक पदक भी दर्ज है। अब कोई ऐसी चाहत है जो आप हासिल करना चाहते हैं?

-जब भी मैं टेनिस कोर्ट में कदम रखता हूँ तो मुझे लगता है कि मैं अपने परिवार और अपने देश भारत के लिए खेल रहा हूँ। मैं जब भी कोर्ट पर उतरता हूँ तो मैं खुद को गौरवान्वित करने के लिए खेलता हूँ। तीन दशकों से भी ज्यादा समय तक देश के लिए खेलना मेरे लिए बहुत खास है और इस आखिरी साल को मैं एक आखिरी दहाड़ के रूप में मानता हूँ। मेरे टेनिस

● कोई दो राय नहीं कि आपको जगह कोई नहीं ले सकता पर मौजूदा समय में वह कौन है जो आपको कमी को पूरा कर सकता है? -देखिए मुझे लगता है कि रिकॉर्ड टूटने के लिए ही बनते हैं। ऐसे में मेरा मानना है कि चाहे मेरे डेविस कप में सर्वाधिक मैच जीतने का रिकॉर्ड हो या ओलंपिक में भारत के लिए पदक जीतने का रिकॉर्ड या फिर मेरे इतने लंबे समय तक खेलने का रिकॉर्ड हो, मुझे लगता है कि एक दिन ये सारे रिकॉर्ड कोई ना कोई भारतीय टेनिस खिलाड़ी तोड़ देगा। यह इसलिए क्योंकि हम लगातार बेहतर हो रहे हैं।

करियर का यह आखिरी साल है और मैं इस पूरे सत्र को वन लास्ट गेम्स (एक आखिरी दहाड़) का नाम दूँगा। मैं सही मायने में मेरे उन समर्थकों के साथ जश्न मनाना चाहता हूँ जिन्होंने अब तक मेरे करियर में मेरी जीत और हार में मेरा साथ दिया है। उन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया और इसके लिए मैं उनका शुक्रगुजार हूँ।

● आज भी आपको 46 साल का लड़का माना जाता है। ऐसी क्या खास वजह है कि आप संन्यास के आखिरी साल में भी युवा टेनिस स्टारों को टक्कर देते हैं?

-मैं धन्य हूँ कि मुझे ऐसे माता-पिता मिले। उन्होंने जैसे अनुवांशिक गुण (जींस) मुझे दिए और जैसा माहौल घर में दिया उसके लिए मैं हमेशा शुक्रगुजार रहूँगा। हालांकि मुझे लगता कि पिछले 30 वर्षों में मुझे फिट रखने में कई लोगों की अहम भूमिका रही है। मेरे कोच रिक लीच व बॉब, मेरे फिटनेस ट्रेनर डेव हर्मन व वैभव डागा, मेरे साथ यात्रा करने वाले व

मेरे योगा मास्टर संजय सिंह, मेरे पिता डॉक्टर पेस जो कि मेरे डॉक्टर भी हैं और मेरा प्रबंधन करने वाली मेरी टीम। ये सभी जश्न मनाना चाहता हूँ साथ रहे हैं और इन सभी ने मेरे करियर में बहुत अहम भूमिका निभाई है। इन सभी की वजह से ही आज मैं इतने सारे खिताब जीत पाया और इसलिए इन सभी का मैंें शुक्रिया अदा करना चाहूँगा।

● संन्यास के बाद आपको क्या योजना है। क्या आप कोचिंग देंगे या फिर प्रबंधन से जुड़ेंगे या कमेंट्री में हाथ आजमाएंगे या फिर एक फ़ैमली मैन बनेंगे?

-संन्यास के बाद मेरी कुछ योजनाएँ हैं। अभी मैं कई कॉर्पोरेट सेक्टर में मनेबल बढ़ाने के लिए भाषण दे रहा हूँ। स्वस्थ, फिटनेस, आहार और जीवन के तौर तरीकों को लेकर मैं काफी काम कर रहा हूँ। मैं लोगों को उस अनुभव के बारे में बता रहा हूँ जो मैंने पिछले 30 वर्षों में दुनियाभर में भ्रमण करते हुए हासिल किया

संन्यास के बाद वीसीसीआइ अध्यक्ष सौरव गांगुली की तरह टेनिस संघ में भी भूमिका तलाश सकते हैं लिण्डर। द्रविड़ और गांगुली की तरह देश में खेल के विकास को लेकर कुछ करना चाहते हैं। भारत को एक

खेल प्रधान देश बनते देखना चाहते हैं पेस

ताकि वे भी चैंपियन बन सकें। मेरी योजना बच्चों को खेलों के जरिये सही शिक्षा देने की भी है। खेल शिक्षा मेरे लिए काफी अहम है जो एक आम बच्चे के जीवन को बदल सकता है। आप एक बच्चे के जीवन को स्कॉलरशिप देकर या फिर उसे शारीरिक रूप से सक्रिय बनाकर मदद कर सकते हैं। मुझे लगता है कि खेल एक ऐसा जरिया है जिसके माध्यम से आप कई समुदायों को एक जगह ला सकते हैं। मेरा सपना है कि मैं भारत को एक खेल प्रधान देश के रूप में विकसित होता देखूँ। भारत में ज्यादा बौद्धिक रूप से दक्ष, चिकित्सीय रूप से दक्ष लोग हैं लेकिन हमारे पास खेलों में एक स्वस्थ समुदाय तैयार करने का अच्छा मौका है।

● देश में मौजूदा समय में टेनिस के भविष्य को आप कैसे देखते हैं?

-मुझे लगता है कि देश में टेनिस का भविष्य उज्ज्वल है। मुझे लगता है कि मेरे जैसे जो भी देश के टेनिस खिलाड़ी हैं जो अपने करियर के अंतिम पड़ाव पर हैं, उन्हें टेनिस को बढ़ावा देने के लिए कुछ करने की जरूरत है। अगर आप देखें तो राहुल द्रविड़ ने संन्यास के

बाद भारतीय अंडर-19 क्रिकेट टीम को कोचिंग देकर विश्व चैंपियन बनाया। यह शानदार है। 1991 में कोलकाता के सॉल्ट लेक स्टेडियम में मेरे साथ अभ्यास करने वाले सौरव गांगुली ना सिर्फ भारत के बेहतरीन कप्तान हुए बल्कि अब बीसीसीआइ के अध्यक्ष के रूप में अपना दायित्व निभा रहे हैं। वह अब प्रबंधन में आकर अपनी भागीदारी निभा रहे हैं।

इसी तरह अगर आप पुलेला गोपीचंद को देखें तो उन्होंने ना सिर्फ ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप जीता बल्कि साइना नेहवाल और पीवी सिंधू जैसे ओलंपिक पदक विजेता भी तैयार किए। ये वैसे लोग हैं जिनकी में बहुत इज्जत करता हूँ क्योंकि ये लोग वापस खेल समुदाय में लौटे और अपने अनुभव और ज्ञान के दम पर बदलाव लाने में सफल रहे।

● क्या आप भारतीय टेनिस के अगले सौरव गांगुली होंगे?

-अभी मैं इस बारे में ज्यादा कुछ नहीं कह सकता। मैं कह सकता हूँ कि मेरे लिए संभावनाएँ हैं और अपने करियर के अंतिम साल में मैं तमाम संभावनाओं पर विचार करूँगा और इसके बाद तय करूँगा कि संन्यास के बाद कौन सी वह सबसे सही चीज है जो की जा सकती है। मैं इस बारे में पूरी तरह से विचार करूँगा।

● इस साल होने वाले टोक्यो ओलंपिक को लेकर आपको क्या योजनाएँ हैं?

-मैं अभी इस पर ज्यादा कुछ नहीं कह पाऊँगा क्योंकि अभी भी ओलंपिक बहुत दूर है। मुझे लगता है कि ओलंपिक के लिए तैयारी और तैयारियाँ अभी काफी दूर हैं।



लिण्डर पेस ● फ़ाइल फोटो, ट्विटर

नडाल और किर्गियोस जीते

मेलबर्न, एएफपी: विश्व के नंबर एक खिलाड़ी राफेल नडाल और ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी निक किर्गियोस ने अपने-अपने मुकाबलों में जीत के साथ गुरुवार को यहाँ ऑस्ट्रेलियन ओपन के पुरुष सिंगल्स के तीसरे दौर में जगह बनाई।

रोड लेवर एरिना में शीर्ष वरीय नडाल को दो घंटे 30 मिनट तक चले मैच में अर्जेंटीना के फेडेरिको डेलबोर्निस के खिलाफ सीधे सेटों में 6-3, 7-6, 6-1 की जीत के दौरान अधिक पसीना नहीं बहाना पड़ा। स्पेन के खिलाड़ी नडाल अगले दौर में हमवतन पाब्लो केरेनो बुस्ता से भिड़ेंगे, जिनके साथ इस महीने एटीपी कप में उन्होंने डबल्स जोड़ी बनाई थी। नडाल ने कहा, 'यह मुश्किल मैच था। मैंने ब्रेक प्वाइंट पर कई मौके गंवा दिए, लेकिन दूसरा

सेट जीतने में सफल रहा। तीसरे सेट में मैं अधिक शांत, अधिक आक्रामक था और बेहतर तरीके से खेल पाया।' नडाल विश्व के 7वें रैंकिंग के खिलाड़ी डेलबोर्निस पर पिछले तीन मैचों में जीत दर्ज कर चुके हैं और उनके खिलाफ केवल 10 गेम ही हारे हैं। अर्जेंटीना के खिलाड़ी का मेलबर्न में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2016 में रहा था जहाँ वह तीसरे दौर से ही बाहर हो गए थे।

नडाल का बॉल ग्लॉ से घ्या: डेलबोर्निस के खिलाफ फॉरहेड से रिटर्न करते हुए नडाल की गेंद बॉल ग्लॉ को लग गई थी। इसके बाद वह बॉल ग्लॉ से मिलने गए और उनके गाल पर किस करते हुए उससे मुफ़ी मांगी। हालांकि मैच खत्म होने के बाद नडाल बॉल ग्लॉ से बात करने लगे और अपने माथे पर बंधी एक पट्टी को उतारकर उसे दे दिया। नडाल उस पट्टी को मैच खेलते समय अपने माथे पर बांधकर खेलते हैं। इस पर उन्होंने कहा, 'उसके लिए यह एक अच्छा पल नहीं था। मैं उसके लिए बहुत डरा हुआ था और गेंद बहुत तेज थी और उसके पास

चली गई। मैं खुश हूँ कि वह ठीक है। वह बहादुर है। यह मेरे करियर के सबसे डरावने पलों में से एक रहा है।'

अन्य मुकाबलों में जंगलों में लगी आग के पीड़ितों की मदद के लिए धनराशि जुटाने के प्रयास में अहम भूमिका निभाने के कारण लोकप्रिय हुए किर्गियोस ने चार सेट में फ्रांस के जाइल्स सिमोन को 6-2, 6-4, 4-6, 7-5 से हराया। वहीं, जर्मनी के एलेक्जेंडर ज्वेबेर ने फॉर्म में वापसी का संकेत देते हुए इगोर गेरसिमोव को 7-6, 6-4, 7-5 से हराया। पांचवीं वरीय डोमिनिक थिएम को हालांकि

ऑस्ट्रेलियन ओपन ● विश्व के नंबर एक खिलाड़ी राफेल ने दूसरे दौर में डेलबोर्निस को सीधे सेटों में हराया ● ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी निक ने चार सेट में फ्रांस के जाइल्स सिमोन को मात दी



बॉल ग्लॉ को अपने माथे की पट्टी देते स्पेन के टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल ● रायट

ऑस्ट्रेलिया के 140वें नंबर के खिलाड़ी एलेक्स बोल्ट के खिलाफ पांच सेट तक जूझना पड़ा। थिएम ने हालांकि धैर्य बरकरार रखते हुए 6-2, 5-7, 6-7, 6-1, 6-2 से जीत दर्ज की।

फिर मौसम का खलल: टूर्नामेंट के आयोजकों के सामने बारिश के कारण नई चुनौती सामने आई, जिससे कोर्ट कीचड़ के कारण खेलने योग्य नहीं रहे। इस साल टूर्नामेंट को जंगलों की आग के कारण फैले धुएँ और राख, तेज बारिश और तेज हवाओं का सामना करना पड़ा है। इससे पहले घूल-मिट्टी वाली बारिश के कारण मेलबर्न पार्क के कोर्ट पर कीचड़ की परत जम गई जिसे साफ करने में कई घंटे लग गए और कई बाहरी कोर्ट उपयोग में नहीं लाए जा सके।

सानिया टूर्नामेंट से बाहर: मातृत्व अवकाश के बाद टेनिस कोर्ट पर लौटीं भारत की सानिया मिर्जा पहले ग्रैंडस्लैम के शुरुआती दौर से ही बाहर हो गईं। सानिया और यूकेन की नादिया किचनोक ने पिछले सप्ताह ही होबार्ट अंतरराष्ट्रीय डबल्स खिताब जीता था। दोनों खिलाड़ी महिला डबल्स के पहले दौर में चीन की शियुआन हान और लिन झू से 2-6, 0-1 से पीछे चल रही थीं, तब सानिया ने कोर्ट छोड़ा। वह दो साल बाद कोर्ट पर लौटी हैं। सानिया को मेडिकल टाइमआउट लेना पड़ा। लिण्डर पेस मिक्स्ड डबल्स में येलेना ओस्ट्रोपेको के साथ शनिवार को स्टोर्स सिडर्स और मार्क पोलमैस के खिलाफ खेलेंगे।

मुगुरुजा, हालेप और प्लिस्कोवा तीसरे दौर में: स्पेन की गब्रियेला मुगुरुजा, रोमानिया की सिमोना हालेप और चेक गणराज्य की कैरोलिना प्लिस्कोवा यहाँ ऑस्ट्रेलियन ओपन के महिला सिंगल्स के तीसरे दौर में पहुंच गईं। मुगुरुजा ने अला टैमजानोविक को 6-3, 3-6, 6-3 से हराया। प्लिस्कोवा ने लाउरा सेगमंड को सीधे सेटों में 6-3, 6-3 से मात दी। वहीं, हालेप को हैरीट डार्ट को 6-2, 6-4 से हराने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई।